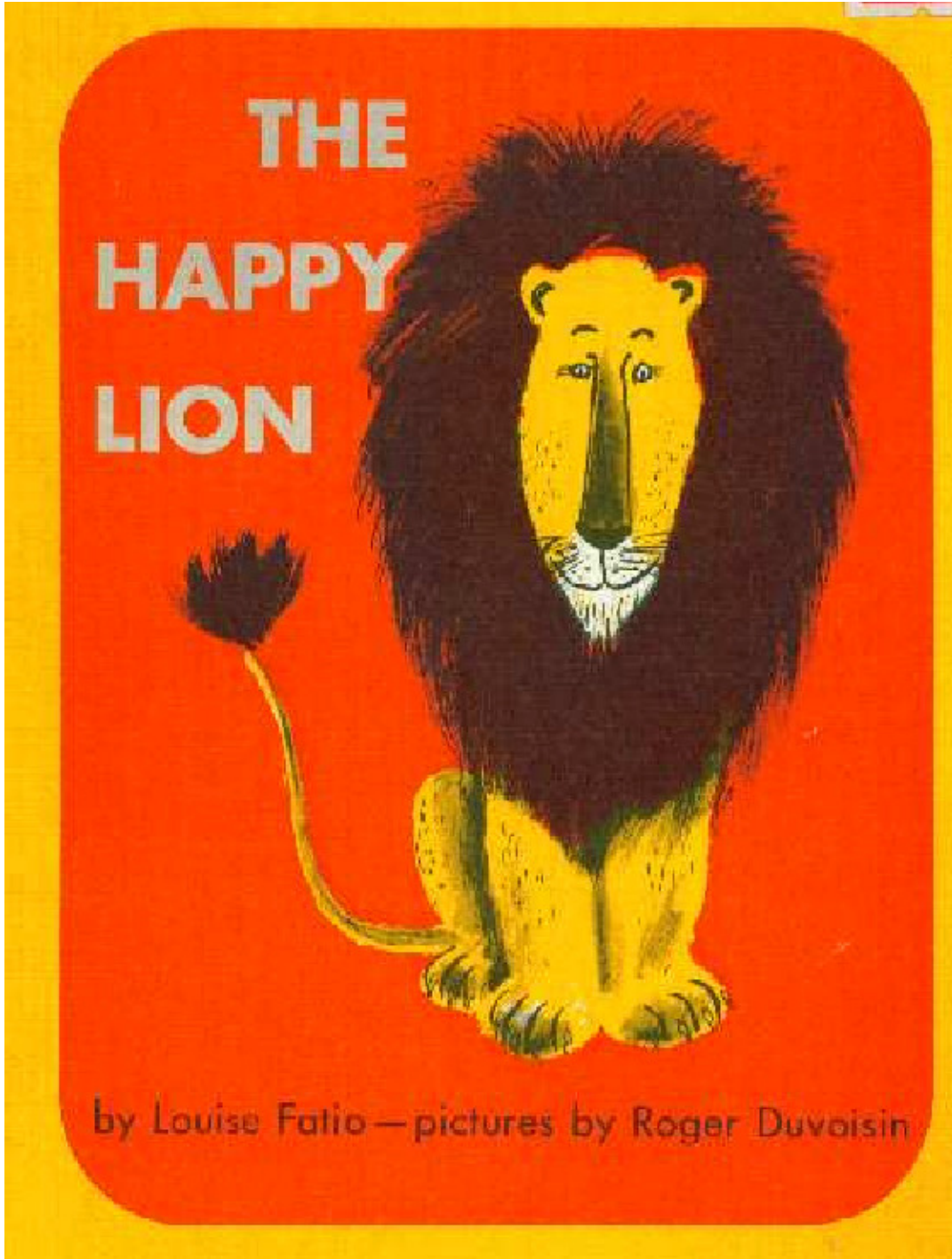


खुश शेर

लुई फातियो, चित्र : रॉजर दुवोइसिन

हिंदी : विदूषक





There was once a very happy lion.

कभी एक बहुत खुश शेर था.





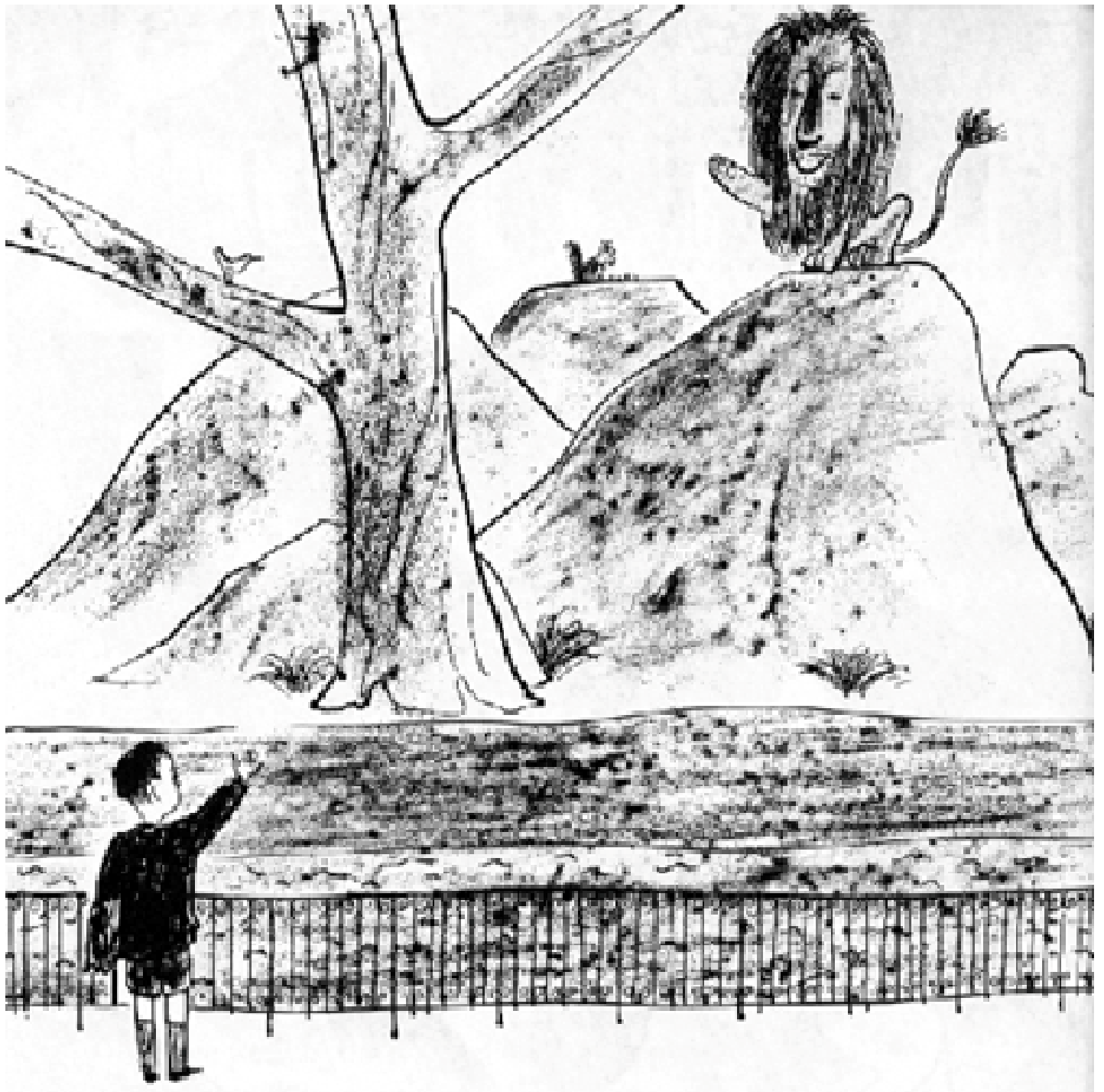
His home was not the hot and dangerous plains of Africa where hunters lie in wait with their guns; it was a lovely French town with brown tile roofs and gray shutters.

उसका घर गर्म अफ्रीका में नहीं था. अफ्रीका में शेरों को मारने के लिए शिकारी हमेशा अपनी बंदूकें तानें रहते हैं. यह शेर फ्रांस के एक सुन्दर शहर में रहता था. वहां घरों पर सिलेटी दरवाज़े और छतों पर लाल टाइल्स थे.



The happy lion had a house in the town zoo, all for himself, with a large rock garden surrounded by a moat, in the middle of a park with flower beds and a bandstand.

शहर के चिड़ियाघर में, शेर का अपना बड़ा घर था – जहाँ वो बिल्कुल अकेले रहता था. घर के साथ में एक पत्थरों का बाग़ था जो एक गहरी खाई से घिरा था. उसका घर एक बड़े पार्क के बीच में था. वहाँ फूलों की क्यारियां थीं और एक बैंड-स्टैंड भी था.



Early every morning, Francois, the keeper's son, stopped on his way to school to say, "Bonjour, Happy Lion."

चिड़ियाघर के रखवाले का बेटा फ्रैंक, हर सुबह स्कूल जाते समय शेर के घर के सामने रुकता और कहता, "नमस्ते, शेर महाशय."



Afternoons, Monsieur Dupont, the schoolmaster, stopped on his way home to say, “*Bonjour, Happy Lion.*” Evenings, Madame Pinson, who knitted all day on the bench by the bandstand, never left without saying, “*Au revoir, Happy Lion.*”

दोपहर को स्कूल मास्टर - मिस्टर डूपोंट घर जाते वक़्त रूककर शेर से कहते, “नमस्ते, शेर महाशय.” शाम के समय मैडम पिनसन – जो बेंड-स्टैंड पर बैठकर दिनभर स्वेटर बुनती रहती थीं जाते वक़्त शेर से यह शब्द ज़रूर कहतीं, “आपका दिन खुश हो, शेर महाशय.”



On summer Sundays, the town band filed into the bandstand to play waltzes and polkas. And the happy lion closed his eyes to listen. He loved music. Everyone was his friend and came to say “Bonjour” and offer meat and other tidbits. He was a happy lion.

गर्मियों में इतवार वाले दिन, शहर का बैंड वहां आता और बैंड-स्टैंड पर संगीत की अनेकों धुनें बजाता. शेर अपनी आँखें बंद करके मंत्रमुग्ध होकर, संगीत सुनता. वो संगीत प्रेमी जो था. शेर का हर मित्र उससे “शुभ-दिन” कहने आता और उसे मांस के टुकड़े और अन्य चीज़ें खाने को देता. वाकई में वो शेर खुश था.



One morning, the happy lion found that his keeper had forgotten to close the door of his house. "Hmm," he said, "I don't like that. Anyone may walk in."

"Oh well," he added on second thought, "maybe I will walk out myself and see my friends in town. It will be nice to return their visits."

एक दिन सुबह जब शेर ने आँखें खोलीं तो उसने अपना दरवाज़ा खुला पाया.

गलती से उसका रखवाला, दरवाज़ा बंद करना भूल गया था. "मुझे यह पसंद नहीं है. अब जो चाहे वो अन्दर आ सकता है."

"चलो अच्छा ही हुआ," शेर ने सोचा, "आज मैं बाहर निकलकर थोड़ा घूमूंगा और शहर में जाकर अपने दोस्तों से भी मिलूंगा. वो मुझसे बार-बार मिलने आते हैं. कभी तो मुझे भी तो उनसे मिलने जाना चाहिए."



So the happy lion walked out into the park and said, "Bonjour, my friends" to the busy sparrows.

"Bonjour, Happy Lion," answered the busy sparrows. And he said, "Bonjour, my friend" to the quick red squirrel who sat on his tail and bit into a walnut.

"Bonjour, Happy Lion," said the red squirrel, hardly looking up.

फिर खुश शेर पार्क में से बाहर निकला और रास्ते में उसने व्यस्त गौरियों से कहा, "शुभ-दिन." गौरियों ने तुरंत उत्तर दिया, "आपको भी शुभ-दिन, शेर महाशय."

फिर शेर ने लाल गिलहरी से कहा, "शुभ-दिन, मेरी दोस्त."

गिलहरी अपनी पूँछ पर बैठी अखरोट खा रही थी.

"आपको भी शुभ-दिन, शेर महाशय," गिलहरी ने कहा.





Then the happy lion went into the cobblestone street where he met Monsieur Dupont just around the corner. “Bonjour” he said, nodding in his polite lion way. “Hoooooooooohhh ...” answered Monsieur Dupont, and fainted onto the sidewalk. “What a silly way to say bonjour,” said the happy lion, and he padded along on his big soft paws.

फिर शेर खरामा-खरामा सुन्दर पत्थरों वाली सड़क पर आगे बढ़ा. मिस्टर डूपोंट का घर वहीं पास ही में था. “हेल्लो,” शेर ने बड़े अदब से सर झुकाकर मास्टर साहिब का स्वागत किया. “अरे.....” मिस्टर डूपोंट, शेर को देखकर बुरी तरह घबराए और सड़क के किनारे बेहोश हो गए. “भाई यह भी कोई तरीका है हेल्लो करने का,” शेर ने खुद से कहा और फिर वो धीमे-धीमे अपने मुलायम पंजों पर आगे बढ़ा.



‘Bonjour, Mesdames,’ the happy lion said farther down the street when he saw three ladies he had known at the zoo.

‘Huuuuuuuuuuuhhhhhh ...’ cried the three ladies, and ran away as if an ogre were after them. ‘I can’t think,’ said the happy lion, “what makes them do that. They are always so polite at the zoo.”

“नमस्ते मैडम,” शेर ने सड़क पर आगे जाकर तीन महिलाओं से कहा.

शेर उन महिलाओं को अक्सर चिड़ियाघर में देखा करता था.

“अरे बाप रे ...” तीनों महिलाएं ज़ोर से चिल्लाईं और वहां से ऐसे भागीं जैसे कोई भूत उनका पीछा कर रहा हो. “कुछ समझ में नहीं आया, उन्होंने ऐसा क्यों किया. चिड़ियाघर में तो वो बहुत करीने से पेश आती थीं.”



“Bonjour, Madame.” The happy lion nodded again when he caught up with Madame Pinson near the grocery store.

“Oo la la ... !” cried Madame Pinson, and threw her shopping bag full of vegetables into the lion’s face.

“A-a-a-a-choooooo,” sneezed the lion.

“People in this town are foolish, as I begin to see.”

“नमस्ते मैडम,” शेर ने सब्जी की दुकान के पास मैडम पिनसन से कहा.

“बाप रे बाप!” मैडम पिनसन चिल्लाई और उन्होंने सब्जियों का थैला शेर के मुंह पर दे मारा.

“आच्छी!” शेर को छींक आई.

“इस शहर के लोग काफी बेवकूफ हैं, यह मुझे अब समझ में आ रहा है.”



Now the lion began to hear the joyous sounds of a military march.

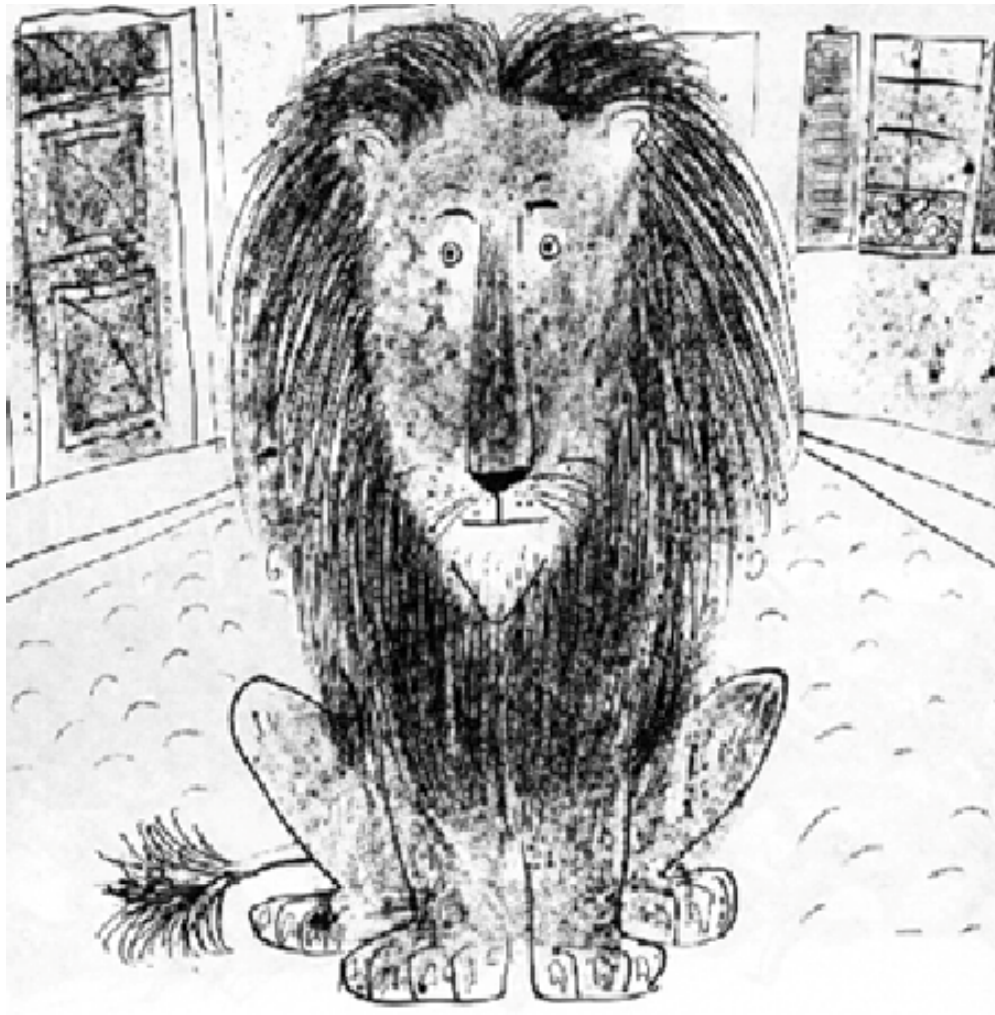
He turned around the next corner, and there was the town band, marching down the street between two lines of people.

Ratatatum ratata ratatatum ratatata boom boom.

Before the lion could even nod and say, “Bonjour” the music became screams and yells.

What a hubbub! Musicians and spectators tumbled into one another in their flight toward doorways and sidewalk cafes. Soon the street was empty and silent.

तभी शेर को फौज़ की लेफ्ट-राईट-लेफ्ट की आवाज़ सुनाई दी. जब वो अगली सड़क पर मुड़ा तो उसने देखा कि टाउन-बैंड, वहां दो कतारों में, लेफ्ट-राईट-लेफ्ट करता हुआ जा रहा था. जैसे ही लोगों ने शेर को सड़क पर घूमते हुए देखा वैसे ही वहां भगदड़ मच गई. इससे पहले कि शेर “नमस्ते” कहता, संगीत - चीखों और चिल्लाहटों में बदल गया. इतना बड़ा हंगामा! संगीतज्ञ और दर्शक सभी, वहां से भागने लगे और छिपने की जगह ढूँढने लगे. जल्द ही सड़क पूरी तरह सुनसान और वीरान हो गई.

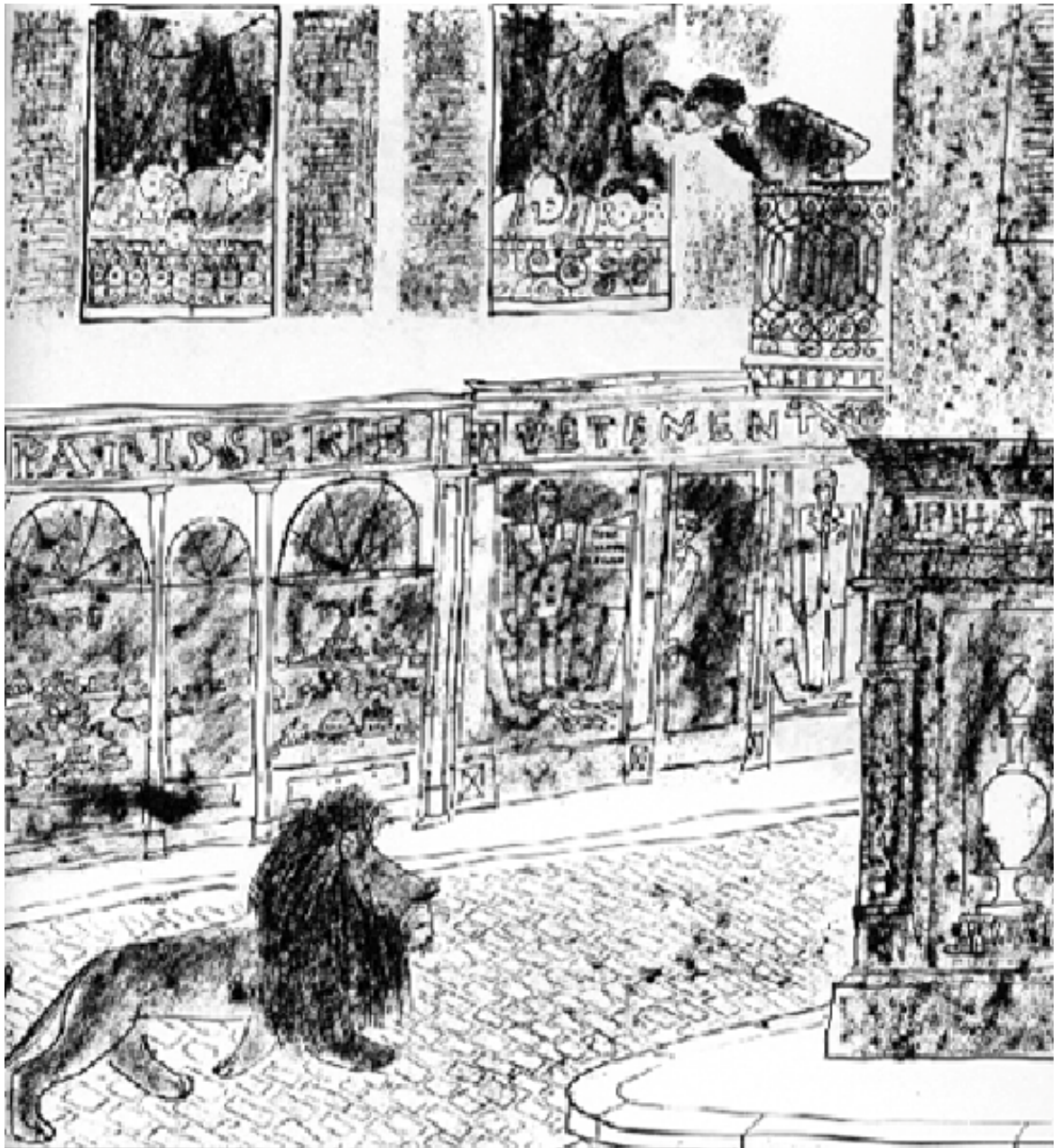


The lion sat down and meditated. "I suppose," he said, "this must be the way people behave when they are not at the zoo."

Then he got up and went on with his stroll in search of a friend, who would not faint, or scream, or run away.

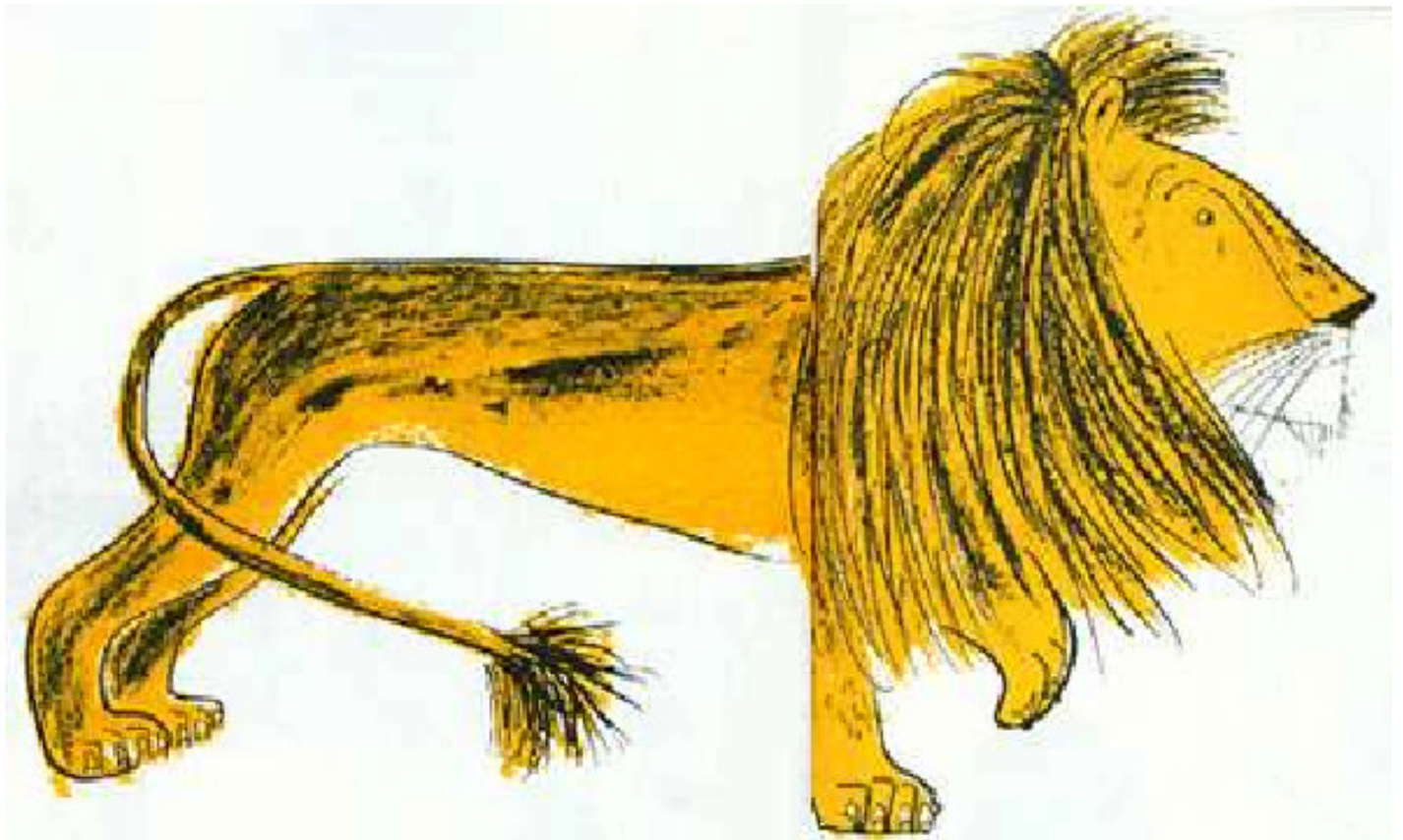
शेर वहां बैठ कर सोचने लगा. "मुझे लगता है कि जब लोग चिड़ियाघर में नहीं होते हैं, तब वे ऐसा ही बर्ताव करते हैं."

उसके बाद वो उठा और एक ऐसे दोस्त की तलाश में निकला जो उसे देखकर चीखे-चिल्लाये नहीं और न ही उसे देखकर भागे.



But the only people he saw were pointing at him excitedly from the highest windows and balconies.

पर जो लोग उसे दिखाई दिए वे सभी अपनी-अपनी छतों और खिड़कियों से झांक रहे थे और उसकी ओर अपनी उँगलियाँ नचा रहे थे.



Now what was this new noise the lion heard? “Tootooooooot...
hoootoooooooootooot...” went that noise.

“Hoooooot tooooooTOOOOOOOOOHHHOOOOT ...” and it grew more
and more noisy. “It may be the wind,” said the lion. “Unless it is the
monkeys from the zoo, all of them taking a stroll.”

फिर शेर को एक नई आवाज़ सुनाई दी? “तूट तूट तूट तूट तूट तूट
तूट तूट...”

इस तरह की आवाज़ - “तूट तूट तूट तूट तूट तूट तूट तूट...”
वो आवाज़ और तेज़ होती गई.

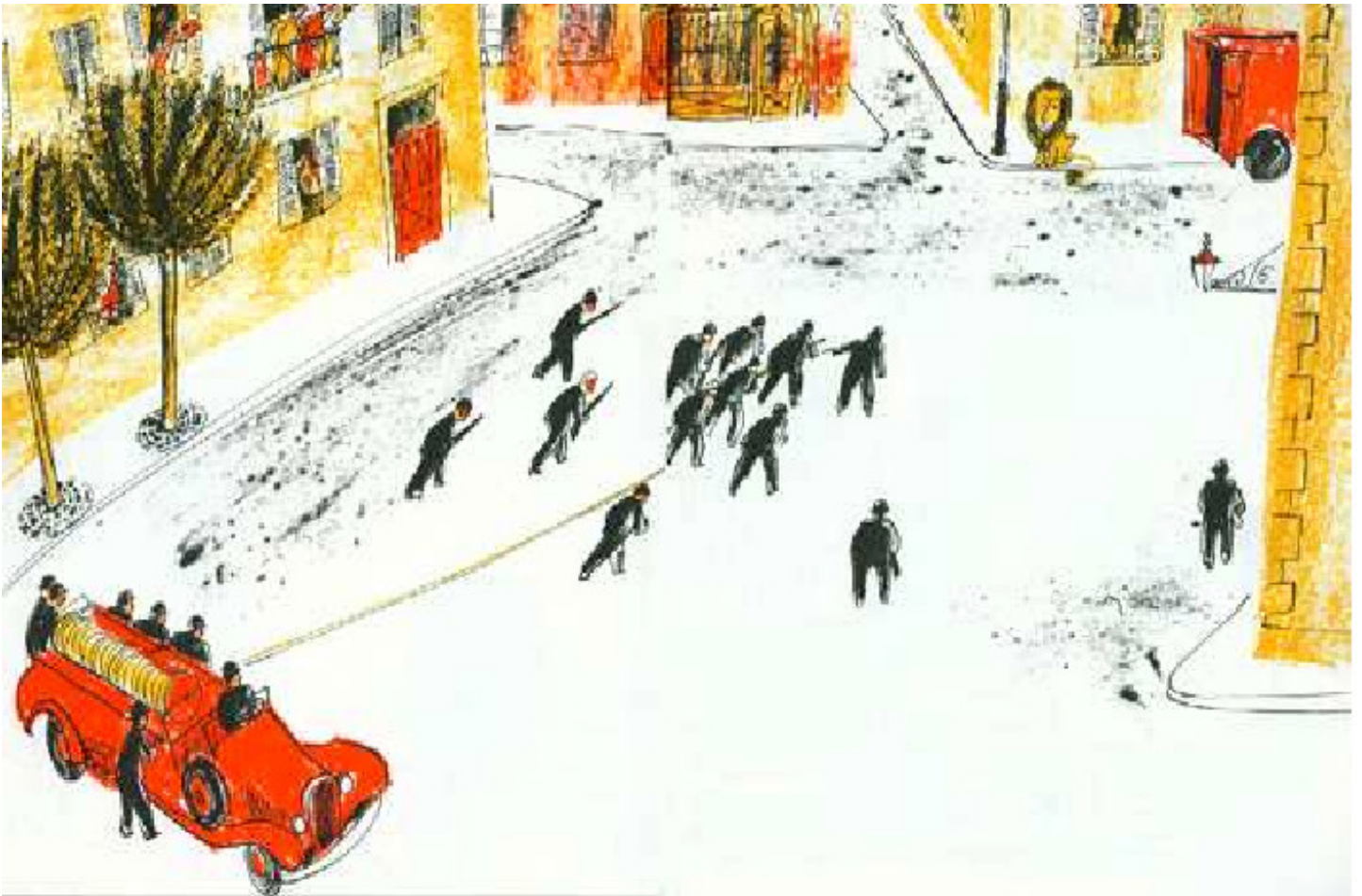
“शायद हवा तेज़ी से चल रही होगी,” शेर ने सोचा. “या फिर चिड़ियाघर के
सब बन्दर मिलकर उधम मचा रहे होंगे.”



All of a sudden a big red fire engine burst out of a side street, and came to a stop not too, too far from the lion. Then a big van came backing up on the other side of him with its back door wide open. The lion just sat down very quietly, for he did not want to miss what was going to happen.

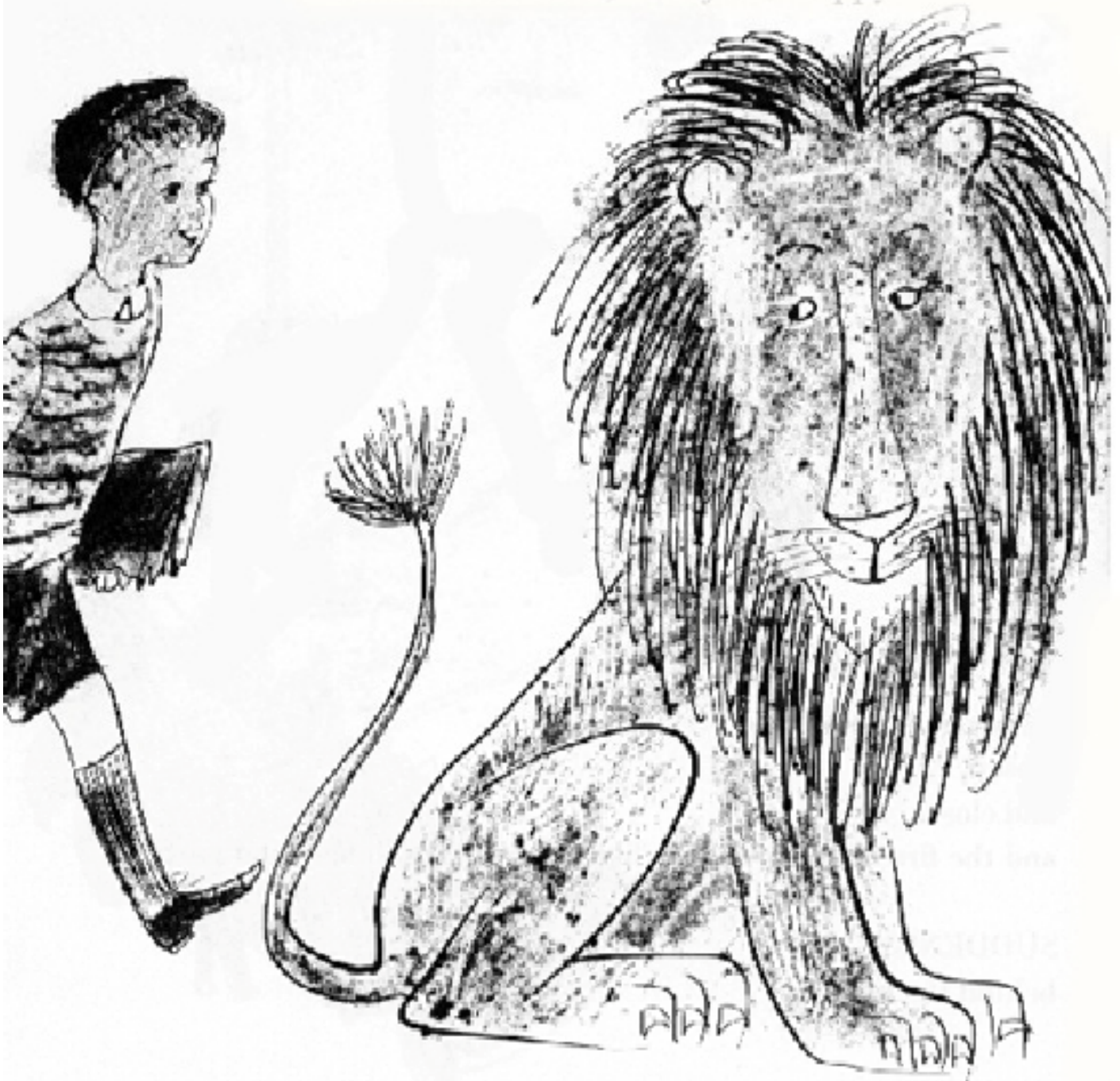
The firemen got off the fire engine and advanced very, very slowly toward the lion, pulling their big fire hose along.

अचानक फायर-ब्रिगेड की लाल गाड़ी तेज़ी से सड़क पर से आई और शेर से कुछ दूरी पर आकर रुकी. फिर एक बड़ी गाड़ी उसके पीछे आकर रुकी. उस गाड़ी का पिछला दरवाज़ा पूरी तरह खुला था. शेर वहीं सड़क पर चुपचाप बैठ गया – वो बहुत उत्सुक था आगे का हाल देखने को! फायरमैन अपनी लाल गाड़ी से उतरे और पानी का मोटा पाइप लेकर धीरे-धीरे शेर की ओर बढ़े.



Very slowly they came closer... and closer... and the fire hose crawled on like a long snake, longer and longer . . . SUDDENLY, behind the lion, a little voice cried, "Bonjour, Happy Lion."

कुछ देर में हल्के-हल्के चलते हुए वे शेर के करीब आए. पानी का मोटा पाइप ज़मीन पर एक मोटे सांप की तरह रेंग रहा था... तभी शेर के पीछे से एक बच्चे की आवाज़ आई, "नमस्ते, शेर महाशय."



It was Francois, the keeper's son, on his way home from school! He had seen the lion and had come running to him. The happy lion was so VERY HAPPY to meet a friend who did not run and who said "Bonjour" that he forgot all about the firemen.

वो आवाज़ चिड़ियाघर के रखवाले के बेटे - फ्रैंक की थी. फ्रैंक स्कूल से घर वापिस लौट रहा था! जब उसने शेर को सड़क पर देखा, तो वो दौड़ा-दौड़ा उसके पास आया. शेर अपने दोस्त से मिलकर बेहद खुश हुआ. वो उसका अकेला ऐसा दोस्त था जो उसे देखकर भागा नहीं, और जिसने उससे "नमस्ते" कहा. शेर अब लाल गाड़ी और फायरमैन आदि के बारे में सबकुछ भूल चुका था.



And he never found out what they were going to do, because Francois put his hand on the lion's great mane and said, "Let's walk back to the park together."

"Yes, let's," purred the happy lion.

फायर-ब्रिगेड वाले, आगे क्या करेंगे? यह शेर को पता ही नहीं चला, क्योंकि फ्रैंक ने शेर के लम्बे बालों पर अपना हाथ फेरा और उससे कहा, "चलिए, हम लोग वापिस पार्क में चलेंगे."

"यहाँ से चलो," शेर ने भी हामी भरी.



So Francois and the happy lion walked back to the zoo. The firemen followed behind in the fire engine, and the people on the balconies and in the high windows shouted at last, “BONJOUR! HAPPY LION!”

उसके बाद फ्रैंक और शेर, खरामा-खरामा चलते हुए चिड़ियाघर वापिस पहुंचे. उनके पीछे-पीछे फायर-ब्रिगेड की गाड़ी आई, और लोगों ने अपनी-अपनी छतों और खिड़कियों से आखिर में चिल्लाकर कहा, “नमस्ते, शेर महाशय.”



From then on the happy lion got the best tidbits the town saved for him. But if you opened his door he would not wish to go out visiting again. He was happier to sit in his rock garden while on the other side of the moat Monsieur Dupont, Madame Pinson, and all his old friends came again like polite and sensible people to say “Bonjour, Happy Lion.”

But he was happiest when he saw Francois walk through the park every afternoon on his way home from school. Then he swished his tail for joy, for Francois remained always his dearest friend.

उसके बाद से शहरवाले बड़ी तादाद में चिड़ियाघर आने लगे और शेर के लिए बढ़िया खाने की चीज़ें लाने लगे. अब अगर गलती से कभी शेर का दरवाज़ा खुला भी रह जाता, तो भी उसका शहर जाने का मन नहीं करता. वो पत्थरों के बाग़ में बैठकर खाई के उस पार मिस्टर डूपोट, मैडम पिनसन और अन्य दोस्तों को बैठे हुए देखता. अब वे सभी उससे आकर कहते, “नमस्ते, शेर महाशय.”

पर शेर को सबसे खुशी तब मिलती जब फ्रैंक शाम को स्कूल से घर आते वक़्त पार्क में से होकर गुज़रता. तब शेर खुशी से अपनी पूँछ फटकारता - क्योंकि फ्रैंक उसका सबसे अज़ीज़ दोस्त था.